बाणभट्टः जीवन परिचय एवं शैली

जीवन-परिचय :-

संस्कृत कवियों का जीवन-परिचय पूर्णतया स्पष्ट नहीं है फिर भी कुछ साक्ष्यों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया जा सकता है।

महाकवि बाण चित्रभानु के पुत्र थे। बाल्यावस्था में ही माता राजदेवी की मृत्यु हो गयी तत्पश्चात् पिता ने ही इनका पालन-पोषण किया। जब इनकी आयु १४ वर्ष थी तभी इनके पिता का भी देहावसान हो गया। पिता की मृत्यु के बाद मित्रों के साथ भ्रमण पर निकल गए । इस भ्रमण के दौरान विभिन्न गुरुकुल में अध्ययन किया। विद्वानों की संङ्गति से विषयों में पारङ्गत हो गये। भ्रमण के समय सांसारिक अनुभव एवं प्राकृतिक दृश्यों का अनुभव प्राप्त करते हुए घर लौट आए। बाद में हर्षवर्धन इन्हें सभापण्डित नियुक्त किया ।

समय :-

कुछ साक्ष्यों के आधार पर बाण का समय स्पष्ट किया जा सकता है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर 606 ई० में हुआ था तथा मृत्यु 648 ई० में हुई थी। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है, कि सातवीं शताब्दी ई० का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

महाकवि बाण की कृतियाँः-

इनकी दो कृतियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं–

1.हर्षचरित :– आठ उच्छ्वास की आख्यायिका है। में बाण की आत्मकथा एवं हर्ष का जीवन-चरित वर्णित है।

2.कादम्बरी :– यह कथा है। इसके दो भाग हैं । पूर्वपीठिका और उत्तर पीठिका ।"

तीसरी रचना 'चण्डीशतक' है, जिसमें 100 श्लोकों में भगवती दुर्गा की स्तुति की गयी है। अन्य दो रचनाएँ मुकुट-ताडितक एवं पार्वती-परिणय है।

बाण की शैली एवं काव्य सौन्दर्यः

बाण संस्कृत के मूर्द्धन्य सम्राट हैं। गद्य-पद्य दोनों में उन्होने पाण्डित्य प्रदर्शन एवं चमत्कार पूर्ण वर्णन किया है।

रीति–

बाण पाञ्चाली रीति के कवि है।, पाञ्चाली अर्थ है-विषयानुरूप शब्दावली का का प्रयोग ।

शैली :-

बाण की रचनाओं में दीर्घ समासा, अल्पसमासा, समासहिता शैली के दर्शन होते हैं, परन्तु किसी भी एक शैली पर जोर नहीं दिया।

भाषाः-

भाषा का अविच्छिन्न प्रवाह एवं कोमलकान्त पदावली का प्रयोग बाण ने बड़ी चतुराई से किया है। इसलिए 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' है। कहा भी गया है।

अलंकारः-

बाण ने श्लेष अर्थापत्ति विरोधाभास आदि प्रयोग अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

रसः-

बाण श्रृंगार रस में सिद्धहस्त हैं। जितना सुन्दर वियोग श्रृंगार का वर्णन किया उतने ही सुन्दर ढंग से संयोग का भी किया। अतः स्पष्ट है कि बाण संस्कृत भाषा के महाकवियों में अग्रष्य हैं। बाणोच्छिष्ट जगत् सर्वम यह उक्ति भी सत्य सिद्ध हो जाती है।

उपमा कालिदासस्य

उपमा के प्रयोग में कालिदास माघ कवि के किसी प्रशंसक कवि ने लिखा-

"उपमा कालिदासंस्य भारवेरर्थ गौरखम।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।।"

यह लिखकर उपमा के प्रयोग में कालिदास को श्रेष्ठ स्थान दिया गया । कालिदास उपमा के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं इसमें कोई संदेह नहीं। कालिदास की उपमा योजना,

सरसता, रम्यता, विविधता एवं मार्मिकता की दृष्टि से बेजोड़ है। कालिदास की संविधान कुशलता, रसयोजना, भाव अभिव्यंजना, ध्वन्यात्मकता एवं प्रासादिक शैली भी अद्वितीय है।

कालिदास की उपमाएँ भावानुकूल, श्लेष की जटिलता से रहित अनूठी एवं विषयानुरुप हैं। कालिदास उपमा के अधिकारी होने के साथ- साथ अन्य अलंकारो में भी श्रेष्ठ माने जाते हैं। शाकुन्तलम् एवं रघुवंशम् में हमें उपमा के साथ- साथ उत्प्रेक्षा, रुपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

विद्वानों का तो यह भी कथन है कि कालिदास ने उपमा अलंकार से बढ़कर सुन्दर प्रयोग अर्थान्तरन्यास का किया है।

कुछ भी हो पर यह निर्विवाद है कि यदपि कालिदास की कृतियों में न केवल उपमा अपितु सभी सादृश्यमूलक अलंकारों का प्रयोग अति रमणीय है।

कालिदास की शैली

कविता-कामिनी-कान्त कालिदास की शैली में कहीं उपमाओं का लालित्य है तो कहीं अर्थान्तरन्यास का अर्थ-गाम्भीर्य, कहीं उत्प्रेक्षाओं की ऊँची उड़ान है तो कहीं प्रांजल पदावली का सौकुमार्य; कहीं प्रसाद है तो कहीं माधुर्य, कहीं कला प्रधान है तो कहीं कल्पना।

- **भाषा-** कालिदास की भाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि वह सदा रसानुकूल होती है। प्रकरण, प्रसंग, पात्र और वर्ण्य-विषय के अनुरूप शब्दावली का संरचना मिलता है। इस प्रकार के पद-माधुर्य के कारण उनके काव्यों में संगीतात्मकता और लयात्मकता का दर्शन होता है। उनकी भाषा सरस, सरल और मनोरम है।
- **रस-** कालिदास मूलतः शृंगार रस के कवि हैं। संयोग और विप्रलम्भ दोनों प्रकार के श्रृंगार के वर्णन में सिद्धहस्त हैं। करुण रस के भी कतिपय वर्णन अत्यन्त मार्मिक है। वीर रस के प्रसंग यद्यपि कम हैं, तथापि उनमें कालिदास की योग्यता किसी भी प्रकार न्यून नहीं है। अन्य रसों के वर्णन अत्यल्प हैं।

- **गुण और रीति-** कालिदास रस-सिद्ध कवि हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रधान कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्ययुक्त और परिष्कृत शैली। उनके सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे गये हैं। मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासयुक्त पदों का होना यही वैदर्भी रीति है। कालिदास की शैली में प्रसाद, माधुर्य और ओज इन तीनों गुणों की सत्ता है।
- **अलंकार -** कालिदास के काव्यों में अलंकार-विधान अनायास सिद्ध है। पद-पद पर अनुप्रास, उपमा, रूपक, अर्थान्तरन्यास और उत्प्रेक्षाओं के दर्शन होते हैं। यद्यपि यमंक, अतिशयोक्ति, दीपक, व्यतिरेक, प्रतिवस्तूपमा, श्लेष, निदर्शना, एकावली, दृष्टान्त, विरोधाभास, परिणाम आदि अलंकारों के भी सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। उपमा कालिदास का अत्यन्त प्रिय अंलंकार है। उनकी उपमाएँ असाधारण और मनोरम होती हैं, जैसे-

  पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युन्दता पार्थिवधर्मपत्न्या।
  तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या।।

  नन्दिनी गाय राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा के बीच वैसी शोभा पा रही है जैसी दिन और रात के मध्य में होने वाली रक्तवर्ण संध्या। अर्थान्तरस्य विन्यासे कालिदासो विशिष्यते ।
- **वर्णन-वैचित्र्य -** कालिदास के वर्णनों में वैचित्र्य और वैविध्य दोनों हैं। उन्होंने अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। मनोभावों का विशद् वर्णन, प्रकृति का मानवीकरण, प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति, वर्णनों में सजीवता और स्वाभाविकता, भावानुकूल पद-विन्यास, तात्त्विक वर्णनों के साथ व्यंजना वृत्ति का आश्रय, कला में कल्पना का संयोग और सरल भाषा में भावों की अभिव्यक्ति आदि गुण कालिदास के वर्णनों की विशेषताएँ हैं। सन्ध्याकाल में सूर्यास्त का कितना मनोरम वर्णन है :

  संचारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिगन्ते निलयाय गन्तुम्।
  प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः ।।

➢ **छन्दयोजना** – रघुवंश और कुमारसंभव के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे। छोटे छन्दों में भी उपपाजित अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।

कालिदास की सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हें विश्व-साहित्य में असाधारण स्थान प्रदान करती है। उन्होंने महाकाव्य, गीतिकाव्य तथा नाट्य-रचना सभी में अपनी प्रखर प्रतिभा का समान परिचय दिया है।